नं० १४१

८६

सारगीता

(वेदान्त)

सा
१

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ अर्जुन उवाच॥

ॐ अर्जुन श्रीकृष्ण भगवान
जी को विनती कर के प्रश्न क
रे है॥ कि हे परमेश्वर जी ओंका
र का महात्म विस्तार कर के

कहोसोमैश्रवणकरो ॥ श्रीभ
गवानुवाच ॥ हेश्रद्धेतनुमने
भलाप्रश्नकीयाहै ॥ ॐकार
कामहात्मविस्तारकरकेक
हताहुँ ॥ सोतुमश्रवणकरो ॥

सा
१

परजोगीतासारहै॥ ब्रह्माबि
ष्णमहेस्वरजाकेरनाकारन
होरहे॥ अगनिवायुसूर्जो॥ प
हलीतेरसकोछंदहै॥ तह
॥ तीनेरसकेअग्रस्थानहै॥ न

हंतीनोवेदहै॥ रिग्वेदजजुर्वे
दसामवेद॥ यहतीनोवेदहै
यहतीनोवेदोकाकारणहै॥
ओंकारसेइनकीउत्पतिहै॥ ऋ
ग्वेदकानीलवरणहै॥ यजु

मा
३

3

वैदकापीतवरन है ॥ सामवे
दकाश्वेतवरण है ॥ अकार
अतरकातामपरमशक्ति
है ॥ मकारकेलोकहै ॥ उका
रब्रनरपामन्वपदहै ॥ ६६

देकमलविषेवसेहे ॥ प्रथमश्र
त्रिरिवेदब्रह्मकाहृचार
ॐकारश्रवेरमाथहै ॥ श्रकार
ऋग्जसामवेदमहादेवकेसा
थेहे ॥ यजुर्वेदमनानमभगः

सा
४
५

वानजीहै॥ इहतीनोओंकारके
साथहै॥ अवतीनोअक्षरोकाव
र्णउत्पतिकहताहै॥ अकारब्र
ह्मकीपेतनवाणीहै॥ इजोप्राण
मेउत्पतीहै॥ उकारअक्षराका

अक्रव्राणाहै। सात्विकगुणते
उत्पतिहै॥ मकारअन्तकाकृ
स्ववराणाहै॥ तामसगुणतेउत्प
तेहै॥ हेअर्जुन॥ अकारउकार
मकार॥ इनतीनोअक्षरोंकाप

मा
५
5

कॐकारहोताहै। केसाहैॐ
कार॥जोतोस्वरूपहै॥तीनोइ
सकेदेवताहै॥तीनोअग्नरहै
तीनोमात्राहै॥तीनोस्वरूपहै
ऐसाॐकाहै॥१समाराोता

केअष्टअंगा है। तौ नौऽसकौ अस
ध्यान है॥ तौ नौ देवनादै। जोऽस
ओंकार कौ ना जानै। सो अलखता
हौ जीव है। अब ओंकार का महा
तम कहै॥ ओंकार तै वेद उपजे

मा
९
6

है॥ ॐकारतेसथ्यावरजोगाम
त्रिलोकीउत्पतिभईहै॥ ॐका
रविलासदेकमलविवेवबेस
है॥ तिसकेप्रभावसेविवेकब
नपरमेश्वरहै॥ तिसपरमेश्व

रकोब्रह्मजगपकरश्रेजे।श्रवः
जगाकोसमग्रीहरन॥यौरजः
कोश्रगान॥मनकाश्रमथंभन
सेनोछकोसमाय॥इंद्रियोका
त्रथे॥द्दोमकोसमग्रोश्रात्माज

मा
७
7

तेकोकर्नोहै॥ नलेकीलकुरी
ख्रामाहै॥ उपरकोलकरीओंका
रहै॥ सोध्यानकरमथेहै॥ मथ·
कारदेहस्रगानवपाटहोनेहै॥
जोस्रत्रणोउहोयतोपापोका

नापाकेरे॥ जोयुगवइनहोय

तोसकेकेरहै। तीनप्रकारक

गेकारहै॥ तिसर्भिधारकोसजे

तेलकीलंवीसक्षधाराहै॥

श्रेसोउंकारकोधाराहै॥ चेट॰

कैन्याशिष्टहोताहै॥जोअैसी
अविनाशीजेकारकोजाने॥
सोवेदोकावेताहै॥अवपव
नआराधनाकौंवर्णेकहा॥
प्राकाविधिआत्माकाध्यान

कौ। ॐ भकोवेषविस्वकाध्या
नकौ॥ रेचकांवेषमहेश्वर
काध्यानकौ॥ कैसांहेमहेश्व
रजोमायानैपरहै॥ ब्रतारात्र
हमाज्ञावेदकेश्यामरहै॥ गैं

सा॰ २

९

काकेनादकरिविंदकोवा
यैऔंकारकोयुतिकीवा॰
वकोसंचारकरिनाडीकर
वाउकोचलावैजिह्नाके॰
अग्रकरवाउकोरोकौमैंक

रकोसोयाकरे॥ जोवाउग्रस्वि
नङ्गैईतोजोगोजोगकीग
तेपावे॥ ग्रहनासिकाकीवे
वकरैवाउकोरीकें॥ तेस
केश्रागोतेनालंवपदकोग्रा

सा॰
१॰

10

मोहि है ॥ जपश्रहतलेवाउये
कै ॥ वडूतजोनमकोतेकरे॰
श्रमिलनेकाप्रभावहै ॥
कैसाहैहरिश्रमलनेपाईहै ॥ न
हात्रताहदशाहहेनाहै ॥ ति

मथाहविषेप्रनहै। प्रतविषेजो
नहै। जोतविषेमनहै। नहा·
मतलेवलीनहोताहै॥ सो·
विल्वकापरमपदहै। तिस
पदविषेध्यानहै॥ तिसध्यान

मा ॥

कोब्रलकहतेहै॥ तिसब्रलके
पावतेतेपरमानंदविषेस्थि
तपावैहै॥ सराकॐभकेरचक
कोलिटैविषे॥ पारमहंसपर
मांतरभगावनतिसकोनम

सकार कीजै ॥ सो परमात्मा के
सा है ॥ आदि मध्य अंत ते रहित
है ॥ निर्दोष है ॥ सत्यज्ञानानंद है
तिस ईश्वर के पावने ते मुक्ति
पद को पावते है ॥ ऐसा भगवा

सा
१२
12

नजीकारूपहै॥ सोपापअवते
निर्लेपहै॥ अवअनकेमहिमा
कहेहै॥ अनेसमसतोकीउ
नपतिहै॥ अनहेनेपरमपदहै
तिसअनविषेध्यानहै॥ तिस

ध्यानेकोग्रसकहतेहै॥नाभावि
षेकमलहै॥दसअंगुलातिसक
मलकेनाल॥तिसकमलका
वर्णकेलेकाफूलजैसाहै॥अ
रुचंद्रमाकीजैसीतिसकमल

सा
१३

13

कीआनहै॥ तिसकमलकेवडे
वडेदलहै॥ अतिसेदरातिसके
मलविषेवमैहै॥ तहांअनाह
दसबदहोताहै॥ सोविलकाप
रमपदहै ॥ अर्जुनवाच॥ हेस्री

कमलदेवजोहृदेविषेकर्णिमध·
जोकमलहै॥ सोजाननाकदन
है॥ ब्रह्मपावनाभीकदिनहै॥ दे
जूनाईनजो॥ हृत्कमलकेपा
वनेकोजगानमेरविषेतिष्ट·

सा
१४

पाणको॥ श्रीभगवानुवाच॥ दे
वअर्जनऊर्धमुजो।यदेविषेक
मलहै॥ तिसकोऊँकारकीआ
राधनाकोरसीदाकरे॥ तिस
कमलकेगार्भविषेजायक

रकमलकोप्रकासप्रगादै॥तौ
वापोकानाशहोय॥सारेश
रीरविखपरमहुखउपजे॥ति
मडोडींविखमरणप्रहुखवि
सहै॥ अंगुहमात्रमतिकहते

मा
१५

15

है॥ अब पंचों विषे अष्ट इंद्रादिक
देवता है॥ सो देवता जो आती स्वरू
प है॥ तिस कमल के ऊरे विषे
स्ताज है॥ स्ताज पर वेश्मा है॥
वेश्मा पर छत्र है॥ अग्नि मे जो

तेहै।जोतनैसिंघासनतेहै॥श्रेस
सिंघासननाविषेदेवादिदेवप
तीनारायणहै॥सोनारायण
कैसाहै॥निरदोषहै॥सबाति
दातहै॥श्रवनारायणकारख ९

स्रा
१६
16

न्नपवार्णकहते है ॥ अति सुंदर
प्रफुलतकमलकीन्याई है ॥ अ
ष्टदलकमलविषे ब्रह्म आब्र
पै है ॥ कौन कौन आयुध पै है ॥ शं
ख ॥ चक्र ॥ गदा ॥ पद्म ॥ मूसल ।

विघ्न॥ यनविबाणा। अंकुस॥ श्रे

मानोहरी है॥ कंचनकमलकी

न्याई॥ तिसकमलकाप्रकास

है॥ शुद्धस्फटिककीन्याईपर

मसुद्ध है॥ कोटीचंद्रमाकेजैस

स्म
१०
17

अंतगुणधारी है॥ कोटी सूर्य का
जैसा प्रकाश है॥ कोटी चंद्रमा
जैसे सीतलता है॥ भुजा विषे
कडे है॥ चरणां विषे नूपुर है॥
कंठ विषे माला है॥ कटि विषे

ठ्यंटकाहै। कानोविषेमेंउल
है॥ चारेजगावणेथावैहै॥ सा
मजगाविषेसूक्ष्मवणीहै॥ वेला
विषेरक्तवणीहै॥ ठागुरविषेपी
नवणीहै। कालिजगाविषेनील

सा
१८
18

वाणी है ॥ वाणी वाणि धारे है ॥ सत्व
नेत्रत्वमे है ॥ निरंकार है ॥ त्रयमे
र है ॥ वीमजारा है ॥ श्रतिबिमे
ल है ॥ ज्योती स्वरूप है ॥ श्रेसाष
रूपातम है ॥ वरूड के सा है ॥ जो

गाअरुविज्ञानकाकारणहै ॥
किसीवस्तुकीसाधनानहींक
ते।नादअरुविंदकोकलाती
अतीतहै।जोअैसेपुरुषोतम
कोजानैसोवेदांकावेताहै ॥

सा
१९

19

अर्जुनवाच॥ हे श्रीकृष्ण देवजी
अह एव लविषे भावनाउप
जतीनाही॥ ह एवानावनस
जातीहै॥ अतः जोअलहै॥
मोवणीविहूतेरीहितनहे॥ हेप

भजीजेजोगीश्वरकिसकाध्या
नेकरतेहैं ॥ श्रीभगवानुवाच
हे अर्जुनजेजोगीश्वरोकामन
नहव ॥ जोउनकीकेसीसमा
यहै ॥ इसब्रह्मकोत्राविमध्य

मा
२

ग्रंतविषेषग्रतजानतेहै। सिदे
कमलकोईसीविषेषग्रद्धे
पभगवानहै। जोयहमंत्रके
उच्चारकरे॥ मानकेहोत॥ अह
समीतासारविषेग्रलजान

2

है ५ श्री भगवान कहे है ॥ हे अर्जु
न ॥ इस गीता का सार है ॥ विषयों के
अंधकार को नाश करना है ५
दर्पण की ज्यां ईश्वर दर्शन दिखाव
ती है ॥ इस गीता का सार विवेक

स्मा

२१

21

तौतहै॥ वेदोकाग्रहणपाछौक
श्रेयकटैकराटिबावतौहै॥
जोःसममहातमकापाठकरै॥
अथवाश्रवणकरै॥ सोपरम
पदकोपावै॥ ॥ इतिश्रीबाल

नेवव्याकरण॥ चारोवेद षट्
शास्त्र॥ ई सभ्रह्मो व्यासदेवजी
नेमथे है॥ मथकर महाभार
थकाढ्या है॥ महाभारथम
थकरमातमोमलोकभगव

मा
२२

22

गीताकाजी ॥ भगवद्गीताकेप्र
थकरमा गीताकाजी ॥ श्रर्जु
नकेम्रावार विंदविषेहोस·
कीयाहै ॥ पापोकानाशकरै
दिनादिनाशकापाटकरै ॥ गे

गाजीकेअसनानकाफलहै ॥
जोसाधगीताकाअर्थजलविषे
असनानकरकेपाठकरे। सो
संसारुतेअंधकूपतेनरकिहो
इ॥ श्लोको॥ नानानमदे॥ जसकी

सा
११
27

दातीहै॥ प्रातवेलाकोदातीहै॥
नारायणमयीहै॥ सर्वशास्त्रम
यीगीता॥ सर्वधर्ममयोदयः॥ स
र्वतीर्थमयीगंगा सर्वदेवमयो
हरि॥ जो॥ सकापकसेलाकत्र

यामलोक॥ एकधान आयाव
रणपाट करै॥ नारायण का
ध्यान करै॥ सो संसारते अंपक्ष
पते मुक्ति होइ॥ श्री कृष्ण भग
वानजी के वचन है॥ वचनों ते

सा
२४
24

सागीताकीते॥ हरीनकीफ
लउसनभयाहै॥ इहश्रमनइ
पेहरीनकी॥ रमनघातिसके
नेकिनहीघाते॥ पापोकेष
तातनकोविरचनहारेहै॥ वा

ंवाासद्दावार्वदाभलीभात॰
गीताकापाठकीजै॥ अथवा
श्रवणकीजै। कमलनाभजो
हैश्रीकृष्णभगवानकी॥ति
नकेमुखकमलतेतिकसेहै॥

मा
१५
25

श्रीसुखवाकैहू ॥ गंगगाणीना
गायत्री ॥ ब्रह्मगोविंद ॥ पद्मपं
चेताणकरै ॥ जोहमारणी
ना ॥ कोपढैसोगुनानिजन
॥ कोपानपावै ॥ जोकोहमा

रगीताकीअध्यायएकउननजा
नै॥सोपाठमात्रकरै॥सोभीवि
ष्णुकोविधिमानजाइप्राप
तिहोई॥२सकेआगेसाकहे
इतिश्रीसारगीतासंपूर्णम्॥

